देना ...

(5) **बालक को प्रकृति तथा सामाजिक वातावरण से परिचित कराना** (Acquinting the Child with Nature and Social Environment) – यथार्थवादी दर्शन के अनुसार बालक का सम्बन्ध प्रकृति तथा समाज से है। अतः शिक्षा का पाँचवाँ उद्देश्य बालक को प्रकृति तथा समाज का पूर्ण ज्ञान देना है जिससे वह इन दोनों से सामंजस्य स्थापित कर सके।

(6) **व्यावसायिक शिक्षा देना** (Imparting Vocational Education) – यथार्थवाद के अनुसार शिक्षा को मानव के वास्तविक जीवन में काम आना चाहिये। चूँकि वास्तविक जीवन में जीविकोपार्जन की समस्या मुख्य होती है, इसलिए यथार्थवाद के अनुसार शिक्षा का छठा उद्देश्य बालक को व्यावसायिक शिक्षा देना है।

TOPIC- SC-101, SEM- Dr. S. B. Chowdh... Page - 1

यथार्थवाद तथा पाठ्यक्रम
(Realism and Curriculum)

यथार्थवादियों ने इस बात पर बल दिया कि पाठ्यक्रम में केवल उन्हीं विषयों को स्थान मिलना चाहिये जो बालक के लिए उपयोगी हों तथा उसे वास्तविक जीवन के लिए तैयार कर सकें। अतः उन्होंने पाठ्यक्रम में जीवन की यथार्थ परिस्थितियों, आवश्यकताओं तथा समस्याओं को ध्यान में रखते हुए—(1) प्रकृति, (2) विज्ञान, तथा (3) व्यवसाय सम्बन्धी विषयों को प्रमुख स्थान दिया तथा भाषा, कला एवं साहित्य आदि को गौण स्थान दिया। ध्यान देने की बात है कि यथार्थवादियों ने पाठ्यक्रम में 25-30 विषयों को स्थान दिया है। उन्होंने बालकों को अपनी रुचि के अनुसार विषय छाँटने की स्वतन्त्रता भी प्रदान की है। साथ ही स्पष्ट कर दिया है कि मातृभाषा मानव विकास की आधारशिला है तथा जीविकोपार्जन के लिए व्यवसाय अत्यन्त आवश्यक है। अतः पाठ्यक्रम में मातृभाषा तथा उद्योग अनिवार्य विषय होने चाहियें।

यथार्थवाद तथा शिक्षण पद्धति
(Realism and Method of Teaching)

प्रचलित शिक्षा प्रणाली बालक को शब्द का ज्ञान कराती थी। अतः वह बालक को जीवन के लिए तैयार कराने में असफल सिद्ध हुई। यथार्थवादियों ने प्रचलित शिक्षण-पद्धति का विरोध किया और अपनी शिक्षण-पद्धति में ज्ञानेन्द्रियों को माध्यम बनाकर निरीक्षण तथा स्वनिरीक्षण पर बल दिया। दूसरे शब्दों में, यथार्थवादियों ने शब्द की अपेक्षा वस्तु के ज्ञान को महत्त्व प्रदान करते हुये इस बात पर बल दिया कि वस्तु वास्तविक है। अतः बालक को पहले वस्तु दिखाई जानी चाहिये, तत्पश्चात् शब्द का ज्ञान कराना चाहिये।